महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
नैक द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त / Accredited with 'A' Grade by NAAC

प्रारम्भिक हिन्दी काव्य

निर्धारित पाठ्यपुस्तक

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम
प्रथम सेमेस्टर
प्रथम पाठ्यचर्या (अनिवार्य)
पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 01

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट – हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442001 (महाराष्ट्र)

प्रारम्भिक हिन्दी काव्य (निर्धारित पाठ्यपुस्तक)

प्रधान सम्पादक

प्रो॰ गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

सम्पादक

प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह
निदेशक, दूर शिक्षा निदेशालय एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
साहित्य विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

पुरन्दरदास
अनुसंधान अधिकारी एवं पाठ्यक्रम संयोजक– एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम
दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

सम्पादक मण्डल

प्रो॰ आनन्द वर्धन शर्मा
प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह
निदेशक, दूर शिक्षा निदेशालय एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
साहित्य विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रो॰ अरुण कुमार त्रिपाठी
प्रोफेसर एडजंक्ट, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

पुरन्दरदास

प्रकाशक

कुलसचिव, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र, पिन कोड : 442001

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : जून 2018

पाठ्यक्रम परिकल्पना, संरचना, संयोजन एवं पाठ्यचयन
आवरण, रेखांकन, पेज डिज़ाइनिंग, कम्पोज़िंग ले-आउट एवं टंकण

पुरन्दरदास

कार्यालयीय सहयोग

श्री विनोद रमेशचंद्र वैद्य
सहायक कुलसचिव, दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

टंकण कार्य सहयोग (पद्मावती समय)

सुश्री राधा सुरेश ठाकरे
दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

आवरण पृष्ठ पर संयुत विश्वविद्यालय के वर्धा परिसर स्थित गांधी हिल स्थल का छायाचित्र श्री बी. एस. मिरगे जनसंपर्क अधिकारी एवं श्री राजेश आगरकर प्रकाशन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से साभार प्राप्त

हम उन समस्त साहित्यकारों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिनकी कृतियों का उपयोग प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में किया गया है । हम उन समस्त रचनाकारों, अनुवादकों, सम्पादकों, संकलनकर्त्ताओं, सर्वाधिकारधारकों, प्रकाशकों, मुद्रकों एवं इंटरनेट स्रोतों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिनकी सहायता से प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में संकलित रचनाओं के पाठ उपलब्ध हुए हैं।

http://hindivishwa.org/distance/contentdtl.aspx?category=3&cgid=77&csgid=65

- यह पाठ्यपुस्तक दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम में प्रवेशित विद्यार्थियों के अध्ययनार्थ उपलब्ध करायी जाती है।
- इस कृति का कोई भी अंश लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
- इस पाठ्यपुस्तक को यथासम्भव त्रुटिहीन रूप से प्रकाशित करने के सभी प्रयास किए गए हैं तथापि संयोगवश यदि इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का कोई दायित्व नहीं होगा।
- किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र वर्धा, महाराष्ट्र ही होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	कवि	पृष्ठ क्रमांक
1.	चन्दवरदाई	05 – 32
2.	विद्यापति	33 – 39
3.	अमीर ख़ुसरो	40 – 45

चन्दवरदाई

पृथ्वीराज रासो

'पद्मावती' समय

कथा-सार

'पद्मावती समय' पृथ्वीराज रासो का बीसवाँ अध्याय है। रासो में अध्यायों के लिए 'समय शब्द का प्रयोग किया गया है। रासो की कुछ प्रतियों में अध्याय के लिए 'सम्यौ', 'समय', 'प्रस्ताव', 'खण्ड' आदि शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। परन्तु, 'रासो' के 'बृहत् रूपान्तर' को लगभग सभी तेतीस प्रतियों में 'सम्यौ' अथवा 'समय' शब्द का ही प्रयोग हुआ है। इसलिए 'समय' शब्द को ही स्वीकार किया गया है। 'पद्मावती समय' रासो के 69 समयों अथवा अध्यायों में से एक अध्याय है। इस 'समय' का कथा-सार इस प्रकार है –

पूर्व दिशा में समुद्रशिखर नामक एक विशाल दुर्ग था। यादववंशी राजा विजयपाल वहाँ का शासक था। वह अत्यन्त शक्तिशाली राजा था। उसके पास अथाह सम्पत्ति, विशाल सेना तथा विस्तृत प्रदेश था। समुद्र पर्यन्त उसका यशोगान हुआ करता था। वह अद्वितीय वीर था और सदैव सन्नद्ध रहकर समस्त पृथ्वी के राज्य-वैभव की रक्षा किया करता था। उसके दस पुत्र-पुत्रियाँ थीं। पद्मसेन नामक उसकी सुन्दरी रानी थी। उसके गर्भ से पद्मावती नामक एक अनिन्द्य सुन्दरी कन्या ने जन्म लिया।

पद्मावती चन्द्र-कला के समान सुन्दर थी। वह रति के समान आकर्षक तथा अनुराग उत्पन्न करने वाली थी। पशु-पक्षी, जड़-चेतन, सुर-नर सभी उसके सौन्दर्य को देख मुग्ध हो जाते थे। उसके शरीर पर समस्त सामुद्रिक लक्षण थे। वह चौंसठ कलाओं, चौदह विद्याओं तथा छह अंगों में निष्णात थी। वह रति के समान सुन्दर और वसन्त-श्री के समान उल्लसित यौवन वाली थी। (इस स्थान पर कवि ने पद्मावती का बड़ा मनोरम नख-शिख-वर्णन किया है।)

एक दिन वह अपनी सखियों के साथ राजभवन के उद्यान में भ्रमण कर रही थी कि उसने एक शुक देखा। उस शुक को देख वह मोहित हो गयी। पद्मावती के रक्ताभ अधरों को बिम्बाफल समझ शुक लोभ में आकर जो उस पर झपटा तो पद्मावती ने उसे पकड़ लिया और प्रसन्न होकर अन्तःपुर में ले जाकर एक स्वर्ण के पिंजड़े में बन्द कर दिया। पद्मावती अपना सारा खेल-कूद भूल तन्मय हो उस शुक को 'राम-नाम' पढ़ाने में तल्लीन रहने लगी। शुक ने पद्मावती के अनुपम सौन्दर्य तथा वयःसन्धि की अवस्था को देख प्रफुल्ल मन से शंकर और गौरा से प्रार्थना की कि इसे पृथ्वीराज वर के रूप में प्राप्त हो।

वह शुक उद्भट विद्वान् था इसलिए पद्मावती को अनेक प्रकार की कथाएँ सुनाया करता था। पद्मावती हर समय उसी के साथ वार्त्तालाप करने को लालायित रहती थी। एक दिन पद्मावती ने उस शुक से उसके देश तथा उस

देश के राजा का नाम पूछा। शुक ने उत्तर देते हुए बताया कि हिन्दुस्तान में दिल्ली नामक एक गढ़ है जहाँ इन्द्र का अवतार अद्वितीय वीर पृथ्वीराज राज्य करता है। वह साँभर के चौहान वंश का सोलह वर्षीय युवक है। वह साँभर-नरेश सोमेश्वर का पुत्र है। देवता के रूप में उसने अवतार लिया है। उसके योद्धा तथा सामन्त उद्भट योद्धा हैं। उसने सुल्तान शहाब-उद-दीन मुहम्मद ग़ोरी को तीन बार बन्दी बनाकर उसकी सारी प्रतिष्ठा धूल में मिला दी है। वह अचूक शब्द-भेदी बाण मारने वाला ऐसा धनुर्द्धर है जिसके धनुष पर लोहे की प्रत्यंचा चढ़ती है।वह बलि के समान दृढ़प्रतिज्ञ, कर्ण के समान दानी, शत सहस्त्र हरिश्चन्द्रों के समान शीलवान्, विक्रमादित्य के समान साहसी और शुभ कर्म करने वाला, दैत्य के समान वीर और अंशधारी पुरुष (अवतार) के समान धैर्यशाली है। उसके तेज से दशों दिशाएँ प्रतिभासित होती रहती हैं। वह रूप में कामदेव का अवतार है। शुक द्वारा पृथ्वीराज का यह वर्णन सुन पद्मावती रोमांचित हो उठी और पृथ्वीराज पर आसक्त हो गयी।

पद्मावती शनैः शनैः बाल्यावस्था को पारकर यौवनवती हो गयी। यह देख उसके माता-पिता चिन्तित हो उठे और उन्होंने उसके लिए उपयुक्त वर की खोज में ध्यान लगाया। उन्होंने अपने कुल-पुरोहित को बुलकार सारी बातें समझाईं और आज्ञा दी कि वह किसी शीलवान् शुद्ध कुल के श्रेष्ठ राजा का चयन कर उसके साथ पद्मावती की सगाई पक्की कर आए। राजा ने उस कुल पुरोहित को लग्न तथा शगुन की सामग्री दे प्रस्थान करने की आज्ञा दी। यह समाचार सुन समुद्रशिखर में उल्लास छा गया और मंगल-वाद्य बजने लगे।

शिवालिक पर्वत श्रेणी में कुमाऊँ नामक एक दुर्ग था। यहाँ कुमोदमणि नामक राजा राज्य करता था। वह अथाह सम्पत्ति और विशाल सेना का स्वामी था। उसे पद्मावती के लिए उपयुक्त वर समझ विजयपाल के कुल पुरोहित ने नारियल प्रतिष्ठित कर तथा मणिरत्नों से चौक पूर कन्या का वाग्दान कर दिया। राजा कुमोदमणि ने सहास्य लग्न स्वीकार कर ली। सारे नगर में आनन्द की दुन्दुभियाँ बजने लगीं।

राजा कुमोदमणि अनेक राजाओं एवं गढ़-पतियों को सपरिवार निमन्त्रित कर खूब धूमधाम के साथ बरात सजाकर पद्मावती को ब्याहने चला। उसके साथ उसकी सेना चली जिसमें दस हजार अश्वारोही, पाँच सौ हाथी तथा असंख्य पैदल थे। उधर समुद्रशिखर में विभिन्न प्रकार के वाद्य तथा शहनाइयाँ बज रही थीं। सारा नगर उत्साह एवं उल्लास से ओत-प्रोत हो रहा था। बरात के स्वागत के लिए अत्यन्त सुन्दर मण्डप तथा तोरण बनाये गये थे। विवाह की इन तैयारियों को देख पद्मावती बहुत व्याकुल हो उठी। उसने शुक से एकान्त में कहा कि तुम तुरन्त दिल्ली जाओ पृथ्वीराज को बुला लाओ। उसने पृथ्वीराज के लिए सन्देश भेजते हुए कहलवाया कि प्राण रहते पृथ्वीराज ही मेरे प्रिय बने रहेंगे। इस मौखिक सन्देश के अतिरिक्त उसने पृथ्वीराज के लिए एक पत्र भी लिखकर दिया जिसमें मुहूर्त, दिन, सम्वत् आदि लिखकर आगे लिखा कि जिस प्रकार कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया था उसी प्रकार तुम निश्चित दिवस को नगर के पश्चिम में स्थित शिव मन्दिर से प्रातः पूजा के समय मेरा अपहरण करो।

पद्मावती के पत्र को लेकर शुक वायु-वेग से दिल्ली जा पहुँचा और उस पत्र को पृथ्वीराज को दे दिया। पृथ्वीराज ने पत्र को पढ़ तुरन्त समुद्रशिखर को चलने की तैयारियाँ करनी प्रारम्भ कर दीं। उसने चामुण्डराय को

दिल्ली का भार सौंपा और स्वयं समस्त सूरवीर सामन्तों तथा चन्दवरदायी को साथ ले पूर्व दिशा की ओर प्रयाण कर दिया।

जिस दिन राजा कुमोदमणि अपनी बरात के साथ समुद्रशिखर पहुँचा, उसी दिन पृथ्वीराज भी वहाँ जा पहुँचा और उसी दिन शहाब-उद-दीन मुहम्मद ग़ोरी को भी पृथ्वीराज के इस अभियान की सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना को पाकर शहाब-उद-दीन अपने साथ अत्यन्त क्रूर एवं भयंकर लड़ाके सैनिकों की एक विशाल सेना लेकर पृथ्वीराज का मार्ग रोकने के लिए चढ़ दौड़ा। शहाब-उद-दीन के इस आक्रमण की सूचना चन्दवरदायी ने पृथ्वीराज को दी।

कुमोदमणि की बरात के आगमन का समाचार सुन समुद्रशिखर के समस्त राजकुमार बरात की अगवानी के लिए अपने-अपने घरों को सजाने लगे। समस्त स्त्रियाँ गोखों तथा छज्जों पर बैठ बरात को देखने लगीं। उधर पद्मावती इस दृश्य को देख अपने राजभवन में अत्यन्त व्याकुल हो रही थी और व्यग्र होकर दिल्ली से आने वाले मार्ग की ओर टकटकी लगाए बैठी थी। इसी समय शुक ने आकर उसे पृथ्वीराज के आगमन की सूचना दी। इस समाचार को सुन पद्मावती प्रसन्न हो उठी। उसने अपने मलिन वस्त्र त्याग सोलह शृंगार किये और मोतियों से भरा स्वर्ण का थाल सजा अपनी सखियों के साथ आरती करने के लिए मन्दिर की ओर प्रस्थित हुई। मन्दिर में जाकर उसने शंकर पार्वती की पूजा कर उनकी प्रदक्षिणा की और फिर उनके चरणों पर गिर पड़ी। वहीं उपस्थित पृथ्वीराज को देख उसने मोहित मुग्धा समान अपने आँचल से घूँघट कर लिया।

पृथ्वीराज ने पद्मावती का हाथ पकड़ उसे घोड़े पर बैठाया और दिल्ली की ओर रवाना हो गया। पद्मावती के अपहरण का समाचार सुन समुद्रशिखर नगर में युद्ध के नगाड़े बज उठे। सारी सेना ने पृथ्वीराज का पीछा किया। तीव्र अश्वारोहियों ने आगे बढ़कर पृथ्वीराज को जा घेरा। यह देख पृथ्वीराज ने अपना घोड़ा मोड़ा और उसके योद्धा शत्रु के साथ भिड़ गये। भयंकर संग्राम हुआ। शत्रुओं की पराजय हुई और विजय प्राप्त कर चौहाननरेश दिल्ली की ओर रवाना हुआ।

पृथ्वीराज के आगे बढ़ते ही शहाब-उद-दीन पृथ्वीराज को पकड़ने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर अपनी सेना सहित आगे बढ़ आया। उसने अपने अश्वारोहियों के साथ पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लिया। भयंकर रण-वाद्य बजने लगे। दोनों पक्षों के समस्त योद्धा युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गये। यह देख पृथ्वीराज ने अपनी तलवार निकाल ली और भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो गया। दोनों पक्ष प्राण हथेली पर रख लड़ने लगे। हार-जीत का कोई निर्णय नहीं हो पाता था। सारा रण-क्षेत्र योद्धाओं, घोड़ों एवं हाथियों के छिन्न-भिन्न अंगों से पट गया। यह देख पृथ्वीराज भयंकर रूप से कुपित हो शत्रुसेना पर टूट पड़ा। उसके सामन्तगण भी भयंकर हुँकार कर शत्रुसेना का विनाश करने लगे। धूल उड़ने से रणक्षेत्र में अँधेरा छा गया। इसी समय पृथ्वीराज ने युद्ध करते हुए शहाब-उद-दीन की गर्दन में अपना धनुष डाल उसे पकड़ लिया और बन्दी बना शत्रु-सेना को छिन्न-भिन्न करता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ गया। इस युद्ध में शहाब-उद-दीन की सेना के पाँच सौ चुने हुए वीर तथा पृथ्वीराज के पचास राजपूत योद्धा खेत रहे। पृथ्वीराज की विजय हुई।

शहाब-उद-दीन को बन्दी बना चौहान-नरेश ने गंगा पार की और दिल्ली के निकट दुर्गा मन्दिर में जा पहुँचा। वहाँ पहुँच उसने शुभ मुहूर्त में पद्मावती के साथ विवाह किया। फिर शहाब-उद-दीन को दण्ड दे तथा मुक्त कर उसने अपने राज-भवन में प्रवेश किया। चारों ओर नगाड़े बजने लगे। चन्द्रमुखी मृगनयनी सुन्दरियों ने अपने राजा का स्वागत किया और स्वर्ण-थाल सजाकर उसकी आरती उतारी और मंगल गीत गाने लगीं। पृथ्वीराज ने मस्तक पर मुकुट धारण किया और माथे पर तिलक लगाया। इसके उपरान्त हिन्दुओं में श्रेष्ठ पृथ्वीराज आनन्द के साथ अपने अन्तःपुर में प्रविष्ट हुआ।

मूल पाठ

दूहा

(1)

पूरब दिसि गढ़ गढ़न पति, समुद सिषर अति द्रुग्ग।
तहँ सु विजय सुरराज पति, जादू कुलह अभग्ग॥

शब्दार्थ – समुद सिषर = समुद्र शिखर नामक नगर और दुर्ग। द्रुग्ग = दुर्ग, गढ़, किला। सु = सुन्दर, श्रेष्ठ। विजय = समुद्र शिखर का विजयपाल नामक राजा। सुरराज = इन्द्र। जादू कुलह = यादव वंश का। इसमें 'ह' अपभ्रंश भाषा के सम्बन्ध कारक की विभक्ति है। अभग्ग = अभंग, जिसे भंग न किया जा सके, तोड़ा न जा सके अर्थात् दुर्जेय।

(2)

हसम हयग्गय देस अति, पति सायर म्रज्जाद।
प्रबल भूप सेवहिं सकल, धुनि निसाँन बहु साद॥

शब्दार्थ – हसम = (अरबी-शब्द) ऐश्वर्य, वैभव। हयग्गय = हय + गय, घोड़े और हाथी। 'हयग्गय' शब्द चन्द की भाषा पर अपभ्रंश के प्रभाव तथा 'डिंगल' की छाप को स्पष्ट करता है। अक्षरों का द्वित्व चन्द की भाषा की एक प्रधान विशेषता रही है। देस = देश, प्रदेश, राज्य। पति = पत, प्रतिष्ठा, स्वामी। सायर = सागर, समुद्र। प्रबल = शक्तिशाली, प्रताप। म्रज्जाद = मर्यादा। सेवहिं = सेवा करते हैं। धुनि = ध्वनि, घोष। निसाँन = नगाड़ा, दुन्दुभी। साद = शब्द, निनाद।

कवित्त

(3)

धुनि निसाँन बहु साद, नाद सुरपंच बजत दिन।
दस हजार हय चढ़त, हेम नग जटित साज तिन॥
गज असंष गजपतिय, मुहर सेना तिन संषह।
इन नायक कर धरी, पिनाक धर भर रज रष्षह॥
दस पुत्र पुत्रिय एक सम, रथ सुरंग उम्मर डमर।
भण्डार लछिय अगनित पदम, सो पदमसेन कुँवर सुधर॥

शब्दार्थ – सुरपंच= पंच स्वर, पंचम स्वर अर्थात् पूरे जोर से। दूसरा अर्थ पंच वाद्यों से भी लिया जा सकता है। दिन = प्रतिदिन, नित्यप्रति। हय चढ़त = घोड़ों पर सवार होते हैं, अश्वारोही। हेम = स्वर्ण। साज = घोड़ों का सामान जीन, लगाम, तंग आदि। तिन = उनके। असंष = असंख्य। गजपतिय = गजराज, विशालकाय हाथी। मुहर = (पाठान्तर – मुखर) हरावल या सेना का अग्रभाग, पैदल (मेनारिया)। इस शब्द की व्युत्पत्ति तुर्की शब्द 'मुहरावल' से प्रतीत होती है जिसका अर्थ सेना का हरावल अर्थात् अग्रभाग होता है। तिय = तीन, मेनारिया के अनुसार 'उसके'। संषह = शंख, दस लाख खरब का एक शंख होता है। इक = एक, अद्वितीय, अनुपम। पिनाक = शिव के धनुष का नाम। धर भर = समग्र पृथ्वी अथवा समस्त पृथ्वी का भरण (रक्षा) करने वाला राजा। रज = राज्य, छात्र धर्म। रज = राज्य, छात्र धर्म। रष्षह = रक्षण, रक्षा करना। एक सम = एक समान, एक से। सुरंग= सुन्दर रंग वाला, सुन्दर। उम्मर = अम्बर, आकाश, वस्त्र। डमर = चँदोवे। उम्मर डमर = संध्या के रंग-बिरंगे बादलों के समान अथवा आकाश-स्थित चन्द्रमा के समान। भंडार = खजाना। लछिय = लक्ष्मी, धन-सम्पत्ति। पदम = पद्म, एक संख्या (दस हजार खरब)। सो = उसकी। पदमसेन = पद्मसेन, विजयपाल की रानी। कुँवर = कुमारी, यहाँ रानी से अभिप्राय है। सुघर = सुन्दर।

दूहा

(4)

पदमसेन कुँवर सुघर, ता घर नारि सुजाँन।
ता उर एक पुत्री प्रगट, मनहुँ कला ससिभाँन॥

शब्दार्थ – ता = उसके। सुजाँन = चतुर। उर = हृदय, गर्भ। ससिभाँन = चन्द्रमा के समान।

कवित्त

(5)

मनहुँ कला ससिभांन, कला सोलह सो बन्निय।
बाल बेस ससि ता समीप, अंम्रित रस पिन्निय॥
बिगसि कमल म्रिग भ्रमर, बैन, षंजन मृग लुट्टिय।
हीर कीर अरु बिंब, मोति नष सिष अहिघुट्टिय॥
छप्पति गयंद हरि हंस गति, बिह बनाय संचै सचिय।
पदमिनिय रूप पद्मावतिय, मनहुँ काम कामिनि रचिय॥

शब्दार्थ – सो = से, द्वारा। बन्निय = बनाई गई हो। बेस = वयस, अवस्था। ता = उसके। पिन्निय = पान किया हो। बिगसि = विकसित, खिला हुआ। म्रिग = मृग, हरिण (पाठान्तर – स्त्रिग = (सं) स्रक, माला , शृंखला, श्रेणी)। बैन = वेणु, वंशी। खंजन = खंजन पक्षी। लुट्टिय = लूट लिया हो। हीर = हीरा। कीर = तोता। बिंब = बिम्बाफल। मोति = मोती। नष सिष = नख-शिख। अहिघुट्टिय = अभिघटित किया, बनाया। छप्पति (पाठान्तर – छत्रपति) छिपाती है या छिप जाते हैं। यह 'छत्रपति' पाठ अशुद्ध और असंगत है क्योंकि उससे अर्थ में कोई सौन्दर्य नहीं रहता। गयंद = गजराज। हरि = सिंह। गति = चाल। बिह = विधाता। संचै = साँचा। सचिय = शची, इन्द्राणी, संचित, डाल कर गढ़ा हो। पदमिनिय = पद्मिनी। काम कामिनि = कामदेव की स्त्री, रति।

दूहा

(6)

मनहुँ काम कामिनि रचिय, रचिय रूप की रास।
पसु पंछी सब मोहिनी, सुर, नर, मुनियर पास॥

शब्दार्थ – रास = राशि, पुंज, समूह। मुनियर = मुनिवर। पास = पाश।

(7)

सामुद्रिक लच्छन सकल, चौंसठि कला सुजांन।
जानि चतुरदस अंग षट, रति वसन्त परमांन॥

शब्दार्थ – सामुद्रिक = एक शास्त्र विशेष, जिसके अनुसार मानव के शारीरिक अंगों के लक्षणों के आधार पर उसके विषय में शुभाशुभ निर्णय किया जाता है। लच्छन = लक्षण। चौंसठि कला = भारतीय शास्त्र के अनुसार सम्पूर्ण कलाओं की संख्या चौंसठ मानी गई है। हमारे यहाँ साहित्य को कला

नहीं माना गया है जबकि यूरोपिय शास्त्र में साहित्य को कला स्वीकार किया गया है। गीत, वाद्य, नृत्य आदि चौंसठ कलाएँ होती हैं। सुजांन = निपुण। जानि = जानती है। चतुरदस = चौदह विद्याएँ। अंगषट = वेद के छः अंग – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष तथा छन्द। कुछ आलोचकों ने इसका अर्थ 'षट्-दर्शन' माना है। सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीसांसा तथा वेदान्त षट्-दर्शन कहलाते हैं। परमान = प्रमाण, समान।

(8)

सषियन संग खेलत फिरत, महलनि बाग-निवास।
करि इक्क दिष्षिय नयन, तब मन भयौ हुलास॥

शब्दार्थ – सषियन = सखियों। बाग-निवास = उद्यानगृह, बाग के भीतर बना हुआ महल। कीर = तोता, शुक। इक्क = एक। दिष्षिय = देखा।

कवित्त

(9)

मन अति भयो हुलास, बिगसि जनु कोक किरन रवि।
अरुन अधर तिय सधर, बिम्बफल जानि कीर छवि।
यह चाहत चष चकित, उह जु तक्किय झरप्पि झर।
चंच चहुँट्टिय लोभ, लियौ तब गहित अप्प कर।
हरषत अनन्द मन महि हुलस, लै जु महल भीतर गई।
पँजर अनूप नग मनि जटित, सो तिहि मँह रष्षत भई॥

शब्दार्थ – बिगसि = प्रफुल्लित होना। कोक = चक्रवाक, चकवा नामक पक्षी, कमल। सधर = ऊपर का होंठ। अधर = नीचे का होंठ। चाहत = देख रही थी। चष = चक्षु, नेत्र। उह = उसने। जु = जो। तक्किय = ताक कर। झरप्पि = झपट कर। झर = तुरन्त, तत्क्षण, झट। चंच = चंचु, चोंच। चहुँट्टिय = छिपट गया, चलायी। अप्प = अपने। गहित = पकड़ लिया। कर = हाथ। महि = में। पँजर = पिंजड़ा। अनूप= अनुपम। मनि = मणि। तिहि = उसके। मँह = भीतर, में। रष्षत भई = रखा।

दूहा

(10)

तिही महल रष्षत भइय, गइय षेल सब भुल्ल।
चित्त चहूँट्टयौ कीर सों, राम पढ़ावत फुल्ल॥

शब्दार्थ – तिही = उसे, उसको। षेल = खेल। भुल्ल = भूल गई। चहूंट्टयौ = रम गया। राम = रामनाम। फुल्ल = प्रफुल्लित, प्रसन्न होकर।

(11)

कीर कुँवरि तन निरषि दिषि, नष सिष लौं यह रूप।
करता करी बनाय कै, यह पदमिनी सरूप॥

शब्दार्थ – कुँवरि = राजकुमारी। तन = शरीर। निरषि = देखकर। दिषि = दिशा, ओर, तरफ। लौं = पर्यन्त, तक। यह = ऐसा। करता = कर्त्ता, विधाता। करी = किया। कै = कर।

कवित्त

(12)

कुट्टिल केश सुदेश, पौहप रचियत पिक्क सद।
कमलगंध वयसंध, हंसगति चलत मंदमद॥
सेत वस्त्र सौहै सरीर, नष स्वाति बुंद जस।
भमर भँवहि भुल्लहिं सुभाव मकरंद बास रस॥
नैन निरखि सुष पाय सुक, यह सुदिन मूरति रचिय।
उमा प्रसाद हर हेरियत, मिलहिं राज प्रथिराज जिय॥

शब्दार्थ – कुट्टिल = कुटिल, टेढ़े, घुँघराले। सुदेश = सुन्दर। पौहप = पुष्प, फूल। रचियत = रचित। पिक्क = पिक, कोयल। सद = शब्द, बोली। कमल गन्ध = कमलगन्धा, जिसके शरीर में से कमल की सुगन्धि आती है। वयसंध = वयःसन्धि, वह अवस्था जब बाल्यावस्था की समाप्ति और यौवन का प्रारम्भ होने लगता है अर्थात् जिससे बाल्यावस्था तथा यौवन दोनों के ही लक्षण मिले-जुले से रहते हैं। मद = मदभरी, उन्मत्त। सेत = श्वेत, सफेद। स्वातिबुंद = स्वाति की बूँद अर्थात् मोती। जस = जैसी, समान। भँवहि = घूमते हैं, चक्कर लगाते हैं। भुल्लहिं = भूलकर, विभोर होकर। सुभाव = अनुरक्त होकर। बास = गन्ध। सुष = सुख। सुदिन = शुभ घड़ी। रचिय = रची गई, बनाई गई। उमा = पार्वती। प्रसाद = कृपा। हर = शिव। हेरियत = देखता है। जिय = मन।

दूहा

(13)

सुक समीप मन कुँवरि कौ, लग्यौ बचन कै हेत।
अति विचित्र पंडित सुआ, कथत जु कथा अमेत॥

शब्दार्थ – लग्यौ = लग गया। बचन = बात। हेत = हेतु, लिए। कथत = कहा करता था। अमेत = अमित, अनेक।

गाथा

(14)

पुच्छत बयन सुबाले, उच्चरिय कीर सच्च सच्चाये।
कवन नाम तुम देस, कवन यंद करै परवेस॥

शब्दार्थ – पुच्छत = पूछती है। सुबाले = सुबाला, श्रेष्ठ नारी। उच्चरिय = उच्चारण करो, बताओ। सच्च सच्चाये = सच-सच। कवन = क्या। यंद = इन्द्र, राजा। परवेस = राज्य।

(15)

उच्चरिय कीर सुनि बयनं, हिंदबान दिल्ली गढ़ अयनं।
तहाँ यंद अवतार चहुआंन, तहँ प्रथिराज सूर सुभारं॥

शब्दार्थ – बयनं = वचन। हिंदवान = हिन्दुस्तान। अयनं = स्थान। यंद = इन्द्र। चहुआंन = चौहान वंश। सूर = शूर-वीर। सुभारं (पाठान्तर – सुभानं) = श्रेष्ठ, भारी, बलवान। सुभानं = सूर्य के समान श्रेष्ठ।

पद्धरी

(16)

पद्मावतिहि कुँवरी संघत, दुज कथा कहत सुनि सुनि सुवत्त।
हिंदवान थान उत्तम सुदेस, तहँ उदत दुग्ग दिल्ली सुदेस॥

शब्दार्थ – संघत = साथ, समीप। दुज = द्विज, पक्षी। सुवत्त = सुवृत्त, अच्छी कथा। थान = स्थान। उदत = उदित, प्रकट, प्रसिद्ध। दुग्ग = दुर्ग, गढ़।

(17)

संभरि नरेस चहुआंन थानं प्रथिराज तहाँ राजंत भानं।
वैसह बरीस षोडस नरिंदं, आजानु बाहु भुअलोक यंदं॥

शब्दार्थ – संभरि = शाकम्भरी, सांभर झील के आसपास का प्रदेश। प्राचीनकाल में अजमेर और सांभर का बड़ा लम्बा-चौड़ा राज्य था। थान = स्थान, वंश। राजंत = शोभित। बैसह = वयस, अवस्था। बरीस = वर्ष। षोडस = सोलह। नरिंदं = नरेन्द्र, राजा। आजानु बाहु = घुटनों तक लम्बी भुजाओं वाला। यह सामुद्रिक शास्त्रानुसार श्रेष्ठता एवं महानता का लक्षण माना जाता है। भुअलोक = भूलोक, पृथ्वी । यंद = इन्द्र।

(18)

संभरि नरेस सोमेस पूत, देवंत रूप अवतार धूत।
सामंत सूर सब्बै अपार, भूजांन भीम जिम सार भार॥

शब्दार्थ – सोमेस = सोमेश्वर, पृथ्वीराज का पिता। पूत = पुत्र। देवंत = देवता के समान। धूत = वीर, पराक्रमी, धृत, धारण किया, लिया। सब्बै = सर्व, समस्त। भूजांन = भोक्ता, भुजाओं में। भीम = भीषण, भयानक, पांडवों में से एक, भीमसेन। जिमि = ज्यों, समान। सार = शक्ति, लोहा। भार = भारी।

(19)

जिहि पकरि साह साहाब लीन, तिहुँ बेर करिल पानीप हीन।
सिंगिनि सुसद्द गुन चढ़िजंजीर, चुक्के न सबद बेधंत तीर॥

शब्दार्थ – जिहि = जिसने। साह = बादशाह। साहाब = शहाब-उद-दीन ग़ोरी। लीन = लिया। तिहुँ बेर = तीन बार। पानीप = पानी, प्रतिष्ठा, कान्ति। सिंगिनि = शिंजिनी, प्रत्यंचा, धनुष की डोरी। सुसद्द = सुशब्द, प्रचंड शब्द, टंकार। गुन= गुण, रस्सी, प्रत्यंचा। जंजीर = साँकल। चुक्के = चूकना। सबद = शब्द। बेधंत = भेद देता है। तीर = बाण।

(20)

बल बैन करन दाँन मान, सत सहस सील हरिचंद समान।
साहस सुक्रम विकम जु वीर, दांनव सुमत अवतार धीर॥

शब्दार्थ – बल = राजा बलि। बैन = वचन। करन = राजा कर्ण। दाँनपान = दानपाणि, बहुत दान देने वाला। सत = शत, सौ। सहस = सहस्र, हजार। सत सहस = सौ हजार, एक लाख। सील = शील। हरिचन्द = दानी राजा हरिश्चन्द्र। सुक्रम = सुकर्म। विक्रम = विक्रमादित्य। जु = जो। वीर = धैर्यवान। सुमत्त = अत्यधिक उन्मत्त।

(21)

दस च्यार जानि सब कला भूप, कंद्रप्प जाँन अवतार रूप।

शब्दार्थ – दिस = दिशा। च्यार = चार। कला = तेज, प्रताप। कंद्रप्प = कंदर्प, कामदेव। दसच्यार = चौदह विद्याएँ।

दूहा

(22)

कामदेव अवतार हुअ, सुअ सोमेसर नंद।
सहस-किरन झलहल कमल, रति समीप बर बिंद॥

शब्दार्थ – हुअ = हुआ हो। सुअ = सुत, पुत्र। नंद = आनन्द देने वाला। सहस किरन = सहस्र किरण अर्थात् सूर्य। झलहल = झलझलाने वाला, खिला हुआ या खिलना, प्रफुल्ल होना। वर = श्रेष्ठ। बिन्द = (राजस्थानी शब्द – बींद) पति, दूल्हा, विद्यमान, शोभित।

(23)

सुनत स्रवन प्रथिराज जस, उमग बाल विधि अंग।
तन मन चित चहुँआन पर, बस्यौ सु-रत्तह रंग॥

शब्दार्थ – स्रवन = कानों द्वारा। जस = यश, कीर्ति। उमग = उमंगित हुए, खिल उठे। बाल = बाला, पद्मावती। बिधि = भली प्रकार, विविध। सुरत्तह = सूरति, प्रेम। रंग = प्रेम अथवा रंग में रंग कर।

(24)

बैस बिती ससिता, आगम कियो बसंत।
मात पिता चिंता भई, सोधि जुगति कौ कंत॥

शब्दार्थ – बैस = वयस, अवस्था। बिनी = व्यतीत हुई। ससिता = शिशुता, बाल्यावस्था। आगम = आगमन। बसन्त = यौवन रूपी बसन्त। सोधि = शोधना, खोजना। जुगति = युक्ति। कौ = का। कंत = वर, पति।

कवित्त

(25)

सोधि जुगति कौ कंत, कियौ तब चित्त चहौं दिस।
लयौ बिप्र गुरु बोल, कही समुझाय तात तस॥
नर नरिंद नरपती बड़े गढ़ दुग्ग असेसह।
सीलवन्त कुल सुद्ध, देहु कन्या सुनरेसह॥
तब चलन देहु दुज्जह लगन, सगुन बन्द हिय अप्प तन।
आनन्द उछाह समुदह सिषर, बजत नद्द नीसाँन घन॥

शब्दार्थ – बोल = बुलाया। तस = इस प्रकार। नरपति = राजा। दुग्ग = दुर्ग। असेसह = असंख्य। कुल सुद्ध = शुद्ध कुल, कुलीन वंश। सुनरेसह = श्रेष्ठ राजा की। चलन = रस्म, रीति, रस्म की सामग्री। लगन = लग्न। दुज्जह = द्विज को, ब्राह्मण को। सगुण = तिलक, टीका। बंद = बंदन, रोली। अप्प-तन = अपने हाथ से, स्वयं। समुदह सिषर = समुद्र शिखर में। नद्द = नाद, घोष। नीसांन = नगाड़े। घन = प्रचंड, घोर।

दूहा

(26)

सवालष्ष उत्तर सयल, कमऊँ गढ़ दूरंग।
राजत राज कुमोदमनि, हय गय द्रिब्ब अभंग॥

शब्दार्थ – सवालष्ष = शिवालिक श्रेणी, सपादलक्ष। साँभर और अजमेर का प्राचीन राज्य, सवालाख। सयल = शैल, पर्वत। कमऊँ = कुमाऊँ। दूंग = दूरवर्ती, दुर्गम। राजत = शोभित, राज्य करता है। कुमोदमनि = कुमोदमणि, कुमाऊँ के राजा का नाम। द्रिब्ब = द्रव्य, धन-सम्पत्ति। अभंग = असंख्य, अटूट।

(27)

नारिकेल फल परठि दुज, चौक पूरि मनि-मूत्ति।
दई जु कन्या बचन वर, अति अनंद करि जुत्ति॥

शब्दार्थ – नारिकेल = नारियल। परठि = स्थापित किया। दुज = द्विज, ब्राह्मण। मनि-मुत्ति = मणि-मुक्ता। जुति = युक्ति, विधिपूर्वक।

भुजंगी

(28)

विहिसित वरं लगन लिग्नौ नरिंदं ।
बजी द्वार द्वरं सु आनन्द दुं दं।
गढ़नं गढ़ं पत्तिसब बोल नुं त्ते ।
आइयं भूप सब कटुम्ब सुजत्ते ।

शब्दार्थ – विहिसित = मधुर हास्य के साथ। लिन्नौ = लिया। दुन्दं = दुन्दुभि, नगाड़े। नुंत्ते = न्योता दिया, निमन्त्रित किया। गढ़पत्ति = गढ़पति, राजा। आइयं = आए, पधारे। कटुम्ब = कुतुम्ब, परिवार। सजुत्ते = साथ अर्थात् सपरिवार।

(29)

चले दस सहस्सं असब्बार जानं ।
पूरियं पैदलं तेतीसु थानं ।
मत्त मद गलित सै पंच दंती ।
मनो साँम पाहार बुगपंति पंती ।

शब्दार्थ – असब्बार = घुड़सवार। जानं = बारात (राजस्थानी शब्द), यान, रथ, अनुभवी। पूरियं = पूर्ण हो गए, भर गए। थानं = स्थान, मण्डल, डेरे, पड़ाव। मत्त मद गलित = जिनके मस्तक से मद झर रहा था ऐसे मदोन्मत्त हाथी। सै पंच = पाँच सौ। दन्ती = हाथी। साँम = श्याम, काले। पाहार = पहाड़, पर्वत। बुगपंति = बगुलों की पंक्ति। पन्ती = पंक्ति।

(30)

चले अग्नि तेजी जु तत्ते तुषारं।
चौवरं चौरासी जु साकत्तिभारं ।
कंठं नगं नूपं अनोपं सुलालं ।
रंग पंच रंगं ढलकंत ढालं ।

शब्दार्थ – अग्नि = अग्नि, आगे। तेजी = वेग के साथ। तत्ते = तप्त, तीव्र, तेज। तुभारं = तुषार नेश के तुखारी घोड़े जो अपनी तीव्र गति के लिए प्रसिद्ध थे। चौवरं = घुँघरू, चमर या चौलड़ी। चौरासी = घोड़े के पैरों का एक आभूषण। साकत्ति = शक्ति, तलवार। भारं = बोझ, भारी। नूपं = अनूप। अनोपं = अनुपम। सूलालं = लाल, एक रत्न। रंग = रंगी हुई। ढलकंत = हिलती हुई। ढाल = ढाल।

(31)

पंज सुर साबद्द बाजित्र बाजं।
साहस सहनाय म्रिग मोहि राजं ।
समुद सिर सिषर उच्छाह छाहं ।
रचित मण्डपं तोरन श्रीयगाहं।

शब्दार्थ – पंच सुर= पाँच प्रकार के बाजे – तन्त्री, ताल नगाड़ा, झाँझ और तुरही। ये पंच मंगलवाद्य माने जाते हैं। बाजित्र = बज रहे हैं। बाज = बाजे, वाद्य-यन्त्र। सहस सहस्रों, हजारों। सहनाय = शहनाई, नफीरी। राजं = राजित, सुशोभित। सिर = ऊपर। छाहं = छाया, छा रहा था। तोरन = बन्दनवार। श्रीयगाहं = अगाध श्री, अनुपम सौन्दर्य।

(32)

पद्मावती विलषि वर बाल बेली।
कही कीर सों बात तब हो अकेली।
झटं जाहु तुम कीर दिल्ली सुदेसं।
बरं चहुवानं जु आनौ नरेसं।

शब्दार्थ – बिलषि = बिलखकर, व्याकुल होकर। वर = श्रेष्ठ, सुन्दर। बाल = नवीन। बेली = लता, बेल। झटं = तुरन्त । आनौ = लाओ।

दूहा

(33)

आँनो तुम चहुवान वर, अरु कहि इहै सँदेस।
साँस सरीरहि जौ रहै, प्रिय प्रथिराज नरेस॥

शब्दार्थ – अरु = और। कहि = कहना। इहै = यह। जौ = जब तक।

कवित्त

(34)

प्रिय प्रथिराज नरेस, जोग लिषि कग्गर दिन्नौ।
लगुन बरग रचि सरब, दिन द्वादस ससि लिन्नौ॥
सै अरु ग्यारह तीस, साष सँवत परमानह।

जोवित्री कुल सुद्ध, वरन वर रष्षहु प्रानह॥
दिष्षंत दिष्ट उच्चरिय वर, इक पलक बिलंब न करिय।
अलगार रयन दिन पंच महि, ज्यों रुकमिनि कन्हर वरिय॥

शब्दार्थ – जोग = योग्य, यथायोग्य, सेवा में। कग्गर = कागज, पत्र। दिन्नौ = दिया। लगुन = लग्न। वरग = कुण्डली। सरब = सब, सभी। द्वादस ससि = शुक्लपक्ष की द्वादसी तिथि। सै अरु ग्यारह तीस = ग्यारह सौ तीस, 1130। साष = शक संवत्। परमानह = प्रमाणित, अवधि, वैशाख, मास। जोवित्री (पाठान्तर – जोषित्री, जोपित्री, जोवित्री) जोवित्री कुल सुद्ध = यदि मैं पवित्र कुल की स्त्री हूँ। जोषित्री कुल शुद्ध = ज्योतिषियों के समूह अर्थात् अनेक ज्योतिषियों द्वारा शोधे हुए समय में। (मेनारिया ने जो + षित्री अन्वय कर 'षित्री' का अर्थ क्षत्रिय माना है। इसके अनुसार अर्थ हुआ यदि मैं शुद्ध क्षत्रिय कुल की होऊँ।) जो पित्री कुल शुद्ध = जो पितृकुल से मैं शुद्ध होऊ अर्थात् मेरा पितृकुल क्षत्रिय वंश का हो। वरनि = वरन करने योग्य, वरणीया, दुल्हन। वर = वरण करके। रष्षहु = रखो या रक्षा करो। प्रानह = प्राणों को। दिष्षंत = देखते ही। उच्चरिय (पाठान्तर – वह धरिय) = उठकर चल दीजिए। पलक = पल, क्षण भर भी। अलगार = अलग ही अलग, गुप्त रूप से। रयन = रैन, रात्रि। महि = में। रुकमिनि = रुक्मिणी, कृष्ण की पटरानी। कन्हर = कृष्ण। वरिय = वरण किया।

दूहा

(35)

ज्यों रुकमनि कन्हर वरिय, ज्यों वरि संभर कांत।
सिव मंडप पच्छिम दिशा, पूजि समय सप्रांत॥

शब्दार्थ – ज्यों = जिस प्रकार। ज्यों = उसी प्रकार। संभर कांत = सांभर नरेश। पूजि समय = पूजा के समय। सप्रांत = सुन्दर प्रातःकाल।

(36)

लै पत्री सुक यों चल्यौ, उड्यौ गगनि गसि बाव।
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर, अट्ठ जाम में जाव॥

शब्दार्थ – गगनि = गगन, आकाश। बाव = वायु। अट्ठजाम = अष्टयाम, आठ प्रहर, एक दिन-रात। गहि बाव = हवा का रुख पकड़कर।

(37)

दिय कग्गर नृपराज कर, षुलि बंचिय प्रथिराज।
सक देखत मन में हँसे, कियौ चलन कौ साज॥

शब्दार्थ – नृपराज = राजाधिराज। कर = हाथ में। षुलि = खोलकर। बंचिय = बाँचा, पढ़ा। साज = तैयारी।

कवित्त

(38)

उहै धरी उहि पलनि, उहै दिनावेर उहै सजि।
सकल सूर सामंत, लिए सब दौलि बंव बजि॥
अरु कवि चंद अनूप, रूप सरसै बर कह बहु।
और सैन सब पच्छ, सहस सेना तिय सष्षेहु॥
चामंडराय दिल्ली धरह, गढ़पति करि गढ़ भार दिय।
अलगार राज प्रथिराज तब, पूरब दिस तब गमन किय॥

शब्दार्थ – उहै = उसी। बेर = बेला, समय। सजि = तैयार होकर। बंव = नगाड़ा, भेरी, बिगुल जैसा सींग का बाजा। चंद = चन्दवरदाई। सरसै = शोभा देना। बर = वर, पृथ्वीराज। पच्छ = पीछे। सष्षहु (पाठान्तर – सथ्थहु) = संख्या में, साथ में। चामण्डराय = चामुण्डराय नामक पृथ्वीराज का एक सेनापति और दुर्द्धर्ष योद्धा। धरह = धरा, प्रदेश, रखा। अलगार = गुप्त रूप से, अलग ही अलग।

दूहा

(39)

जा दिन सिषर बरात गय, ता दिन गय प्रथिराज।
ताही दिन पतिसाह कौं, भइ गज्जनै अवाज॥

शब्दार्थ – जा दिन = जिस दिन। सिषर = समुद्रशिखर। गय = गई, गया। ताही = उसी। पतिशाह = बादशाह शहाब-उद-दीन ग़ोरी। गज्जनै = गजनी में। अवाज = आवाज, सूचना, खबर।

कवित्त

(40)

सन गज्जनै अवाज, चढ्यौ साहाबदीन बर।
षुरासाँन सलतान, कास काविलिय मीर धर॥
जंग जुरन जालिम जुझार, भुजसार भार भुअ।
धर धमंकि भजि सेस, गगन रवि लुप्पि रैन हुअ॥
उलटि प्रवाह मनौं सिंधुसर, रुक्कि राह अड्डौ रहिय।
तिहि घरी राज प्रथिरज सौं, चंद बचन इहि विधि कहिय॥

शब्दार्थ – बर = श्रेष्ठ । षुरासाँन = खुरासान देश । कास = खस, एक प्राचीन देश का नाम । काबिलिय = काबुल निवासी पठान । मीर = नायक, सेनापति, सैयद । घर (पाठान्तर – धुर) = अग्रणी, पक्का, दृढ़ सच्चा । जुरन = भिड़ना, लड़ना । जालिम = क्रूर । जुझार = योद्धा, लड़ने वाले । भुअ = भू, पृथ्वी । सार = लोहा । धर = पृथ्वी, धरा । धमंकि = धमक उठना, डगमगाना । भजि = भागना । सेस = शेषनाग । लुप्पि = लुप्त हो जाना, छिप जाना । हुअ = हो गई । सर = नदी । सिन्धु = समुद्र । रुक्कि = रोककर । राह = मार्ग, रास्ता । अड्डौ रहिय = अड़कर जम गया ।

(41)

निकट नगर जब जाँन, जाय वर बिद उभय भय।
समुद सिषर धन नद्द, इंद दुहुँ घोर गय॥
अगिवानिय अगिवान, कुँअर बनि बनि हय सज्जति।
दिष्षन को त्रिय सबनि, चढ़ि गौष छाजन रज्जति॥
विलषि अवास कूँबरि बदन, मनो राह छाया सुरत।
झंषति गवष्षि पल-पल पलकि, दिषिति पंथ दिल्ली सपति॥

शब्दार्थ – जाँन = बरात । बर = श्रेष्ठ । बिंद = दूल्हा, वर, विद्यमान । उभय = दोनों । भय = हुए । घन नद्द = घोर निनाद । इन्द = राजा (पाठान्तर – दुंद) = दुन्दुभि , नगाड़े । गय = गति, ढंग । घोर गय = भयंकर गति से । अगिवानिय = अगवानी, स्वागत । अगिवान = स्वागत करने वाला । बनि बनि = बनठन कर, सजकर । हय = घोड़े । सज्जति = सजाकर । दिष्षन को = देखने के लिये । त्रिय = त्रिया, स्त्रियाँ । गौष = गौख, गवाक्ष । छाजन = छज्जा । रज्जति = शोभित हुई । विलषि = व्याकुल होकर । अवास = आवास, महल । कूँबरि = राजकुमारी पद्मावती । बदन = मुख । सुरत = अच्छी तरह से, पूर्ण रूप से, प्रेम । झंषति = झींकती है, कुढ़ती है । गवष्षि = गौख, गवाक्ष । पलकि (पाठान्तर – पुलकि) = पुलकित होकर, या पलकें उठाकर । दिषति = देखती है । (पाठान्तर – विषाद) = विषाद के साथ ।

पद्धरी

(42)

दिष्षत पंथ दिल्ली दिसांन,
सुष भयौ सूक जब मिल्यौ आंन।
संदेस सुनत आनन्द नैन,
उमगिय बाल मनमथ्थ सैन।

शब्दार्थ – दिसांन = दिशा की ओर। सुष = सुख, आनन्द। आंन = आकर। उमगिय = उमंगित हुई। बाल = बाला, पद्मावती। मनमथ्थ = मन्मथ, कामदेव।

(43)

तन चिकट चीर डार्‌यो उतारि।
मज्जन मयंक नवसत सिंगार॥
भूषन मँगाय नष सिष अनूप।
सजि सेन मनो मनमथ्थ भूप॥

शब्दार्थ – चिकट = चिक्कट, मैला, मलीन। चीर = वस्त्र। मज्जन = स्नान, लज्जित करने वाली। मयंक = चन्द्रमा। नवसत = 9+7 = सोलह। भूषन = आभूषण। नष सिष = नख-शिख।

(44)

सोब्रन्न थार मोतिन भराय।
झल हल करंत दीपक जराय॥
संगह सषिय लिय सहस बाल।
रुकमनिय जेम लज्जत मराल॥

शब्दार्थ – सोब्रन्न = सुवर्ण, स्वर्ण। भराय = भरकर। झलहल = झिलमिल। करंत = करते हुए। जराय = जलाकर, प्रज्वलित कर। संग्रह = साथ में। सषिय = सखियाँ। बाल = बाला, पद्मावती। जेम = जिमि, ज्यों, समान। लज्जत = लज्जित करती हुई। मराल = हंस।

(45)

पूजिय गवरि शंकर मनाय।
दच्छिनै अंग कर लगिय पाय॥
फिर देषि देषि प्रथिराज राज।
हँस मुद्ध मुद्ध कर पट्ट लाज॥

शब्दार्थ – पूजिय = पूजा की। गवरि = गौरी, पार्वती। दच्छिनै = प्रदक्षिणा करके, दक्षिण अथवा दाहिनी ओर। लगिय पाय = पैर लगना, प्रणाम करना। देषि-देषि = देख-देखकर। हँस = हँस कर। मुद्ध = मुग्ध होकर। मुद्ध= मुग्धा नायिका। पट्ट= वस्त्र। लाज = लज्जित हो घूँघट कर लिया।

(46)

कर पकर पीठ हय परि चढ़ाय।
लै चल्यौ नृपति दिल्लीह सुराय॥
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय।
पदमावतीय हरि लीय जाय॥

शब्दार्थ – षबरि = खबर, समाचार। सुराय = श्रेष्ठ राजा। हरि = हरण।

(47)

बाजी सुबंब हय गय पलाँन।
दौरे सुसज्जित दिस्सह दिसाँन॥
तुम्ह लेहु लेहु मुष जंपि जोध।
हन्नाह सूर सब पहरि कोध॥

शब्दार्थ – बाजी = बज उठी। सुबंध= रणभेरी, युद्ध का बिगुल। हय गय= घोड़े हाथी। पलाँन = जीन और हौदे कसे जाने लगे। दौरे = दौड़ पड़े। दिस्सह दिसाँन = दिशा दिशा से, चारों ओर से। सुसज्जित = सुसज्जित होकर। लेहु लेहु = पकड़ लो, पकड़ लो। मुष = मुख। जंपि= कहते हैं। जोध = योद्धा। हन्नाह = सनाह, कवच, जिरह बख्तर। सूर = योद्धा।

(48)

अग्गे जु राज प्रथिराज भूप।
पच्छै सु भयौ सब सेन रूप॥
पहुँचे सु जाय तत्ते तुरंग।
भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग॥

शब्दार्थ – अग्गे = आगे-आगे। पच्छै = पीछे। तत्ते = तीव्रगामी। तुरंग= घोड़े। भुअ = भू, पृथ्वी। भिरन = भिड़ने वाले, युद्ध करने वाले। जुरि = युद्ध करने लगे। जोध = योद्धा। जंग = युद्ध। भुअ भिरन = युद्ध क्षेत्र।

(49)

उलटी जु राज प्रथिराज बाग।
थकि सूर गगन धर धसत नाग॥
सामंत सूर सब कान रूप।
गहि लोह छोह बाहै सुभूप॥

शब्दार्थ – बाग = घोड़े की लगाम। उलटी = मोड़ी, घोड़े को पीछे की ओर मोड़ा। सूर = सूर्य। थकि = थकित होना, रुकना, ठहर जाना। नाग = शेषनाग, पर्वत। धर = धरा, पृथ्वी। काल रूप = काल के समान विकराल रूप धारण कर। गहि = पकड़ कर। लोह = लोहा, हथियार। छोह = उत्साह के साथ। बाहै = घालने लगे, चलाने लगे। सुभूप = राजा।

(50)

कम्मान बाँन छुट्टहि अपार।
लागत लोह इम सारिधार॥
घमसान घान सब बीर षेत।
घन श्रोन बहत अरु रकत रेत॥

शब्दार्थ – कम्मान = कमान, धनुष। लागंत = लगता है। इम = समान। सारिधार = तलवार की धार। घमसान = घमासान, भयानक। घान = युद्ध। षेत = खेत रहे, मारे गए। घन = घना, अधिक। श्रोन = रक्त। रकत = रक्त-वर्ण, लाल। रेत = भूमि।

(51)

मारे बरात के जोध जोह।
परि रुंड मुंड अरि षेत सोह॥

शब्दार्थ – बरात = यहाँ कुमोदमणि की बरात से अभिप्राय है। जोध = योद्धा। जोह = ढूँढ़-ढूँढ़कर, खोज-खोजकर। रुंड = कबन्ध, सिर कटा हुआ धड़। मुंड = सिर, मस्तक। अरि = शत्रु। षेत = रणक्षेत्र। सोह = शोभित।

दूहा

(52)

परे रहत रिन षेत अरि, करि दिल्लिय मुष रुष्ष।
जीति चल्यौ पृथिराज रिन, सकल सूर भय सुष्ष॥

शब्दार्थ – रिनषेत = रणक्षेत्र। अरि = शत्रु। दिल्लिय = दिल्ली की ओर। मुष = मुख। रुष्ष = रुख। रिन = युद्ध। सुष्ष = सुख, आनन्द।

(53)

पद्मावति इम लै चल्यौ, हरिषि राज प्रथिराज।
एतें परि पतिसाह की, भई जु आनि अबाज॥

शब्दार्थ – इम = इस प्रकार। हरषि = प्रसन्न होकर, हर्षित होकर। एतें = इतने। परि = में। एतें परि = इतने में, इसी बीच। पतिसाह = बादशाह शहाब-उद-दीन ग़ोरी। आनि = आने का। अबाज = समाचार, शब्द।

कवित्त

(54)

भई जु आनि अबाज, आय साहाबदीन सुर।
आज गहों प्रथिराज, बोल बुल्लंत गज्जत धुर॥
क्रोध जोधा अनन्त, करिय पंती आनि गज्जिय।
बाँन नालि हथनालि, तुपक तीरह स्रब सज्जिय॥
पब्बै पहार मानो सार के, भिरि भुजानं गजनेस बल।
आए हकारि हँकार करि, षुरासान सुलतान दल॥

शब्दार्थ – आय = आया। सुर = शूरवीर, असुर ('अ' का लोप है) राक्षस, मध्यकाल में मुसलमानों को असुर कहा जाता था। 'असुर' शब्द का प्रयोग पश्चिम से आने वाले सभी विदेशी आक्रमणकारियों के लिए समान रूप से हुआ है। गहौं = पकडूँगा। बोल = वचन। बुल्लंत = बोलता हुआ। गजत = गर्जन करता हुआ। धुर = निश्चय ही। जोन = युद्धवीर। जोधा = योद्धा। अनंत = असंख्य। करिय = करी, हाथी। पंती = पंक्ति। आनि = अनीक, सेना। गज्जिय = गर्जन करना। ज्ञान = तीर। नालि = बन्दूक, तोप। हथनालि = बड़ी तोप, हाथियों द्वारा खींची जाने वाली बड़ी तोप। तुपक = कड़ाबीन, छोटी तोप, एक लम्बी नाल की बन्दूक। तीरह = बाण। स्रव = सब, समस्त। सज्जिय = सज्जित। पब्बै (पाठ्यान्तर – पवै) = पवि, वज्र पर्वत चलते हैं। सार = लोहा। भिरि = युद्ध। भुजाँन = भुजाओं। गजनेस = गजनीश, गजनी का स्वामी, शहाब-उद-दीन ग़ोरी। हकारि = बुलाए गए। हंकार = हुँकार। षुरासन = खुरासान, एक देश का नाम।

पद्धरी

(55)

षुरासान सुलतान षंधार मीरं।
बलक सो बलं तेग अच्चूक तीरं॥
रुहंगी फिरंगी हलंबी समानी।
ठटी ठट्ट बल्लोच ढालं निसानी॥

शब्दार्थ – षंधार = कंधार, अफगानिस्तान का एक प्रदेश जिसे प्राचीन भारतीय वाङ्मय में गान्धार कहा जाता था। मीरं = सरदार। बलक = बलख, मध्य एशिया का एक प्रदेश तथा नगर। सो (पाठ्यान्तर – स्यों) = साथ, सहित। बलं = बल से युक्त, सेना। तेग = तलवार। अच्चूक = न चूकने वाले। रुहंगी = तुर्क। फिरंगी = यूरोपीय, यह शब्द मध्यकालीन भारत में यूरोप के सभी देशों के निवासियों के लिए प्रयुक्त होता था। हलंबी = हलब देश के वासी, सीरिया के सैनिक। समानी = सगबै, अभिमानी। ठटी ठट्ट = समूह के समूह, दल के दल। बल्लोच = बलूची, बलूचिस्तान के निवासी। ढालं = ढाल। निसानी = निशान, झण्डे।

(56)

मंजारी चवी मुष्ष जबक्क लारी।
हजारी हजारी इकै जोध भारी॥
तिनं पष्षरं पीठ हय जीन सालं।
फिरंगी कती पास सुकलात लालं॥

शब्दार्थ – मंजारी = मार्जारी, बिल्ली। चषी = चक्षु वाले, आँख वाले। मुष्ष = मुख। जंबक्क (पाठान्तर – जंब्बुक्क) = जम्बुक, शृगाल, गीदड़। लारी = लोमड़ी, लोमश। हजारी = एक हजार सैनिकों का नायक, एक-एक योद्धा एक-एक हज़ार सैनिकों के बराबर शक्तिशाली। इकै = एक। जोध = योद्धा। भारी = मुकाबले में भारी पड़ता था। तिनं = उनके। पष्षर = पाखर, युद्ध के समय हाथी घोड़ों पर सुरक्षा हेतु डाली जाने वाली लोहे की कड़ियों की बनी झूलें। हय = घोड़े। सालं = अलंकृत, सजे हुए। फिरंगी = विलायती। कती = छुरी, कटारी। पास = पाश, फंदा। सुकलात = बनात, लाल रंग का ऊनी वस्त्र कलात देश की। लालं (यह पाठ अशुद्ध है। इसका एक पाठान्तर 'नाल' मिलता है। जिसका अर्थ है तोप।)

(57)

जहाँ बाग बाधं मरूरी रिछोरी।
घनं सार संमूह अरु चौंर झौरी॥
एराकी अरब्बी पठी तेज ताजी।
तुरक्की महाबांन कम्मांन बांजी॥

शब्दार्थ – बाग = वल्गा, लगाम। बाँध = बाँधी गई। मरूरी = मरोड़कर, बल देकर। रिछोरी = रिछोली, मोतियों की माला, पछाड़कर। घनं = सघन, अत्यधिक। सार = लोहा। चौंर = कँवर। झौरी = गुच्छेदार, झौंरदार, हिलाना। एराकी = इराक देश के घोड़े। अरब्बी = अरब देश के घोड़े। पटी = घोड़ों की एक विशेष जाति जो अपनी तेजी के लिए प्रसिद्ध थी। तेज = तीव्र-गामी। ताजी = घोड़े। तुरक्की = तुर्की घोड़े। महाबाँन = घोड़ों की एक जाति। कम्मान = घोड़ों की एक जाति। बाजी = घोड़े।

(58)

ऐसे असिव असवार अग्गेल गोलं।
भिरे जून जेतू सुतत्ते अमोजं॥
तिर्म मद्धि सुलतान साहाब आयं।
इसे रूप सों फौज बरनाय जायं॥

शब्दार्थ – असिव = प्रचण्ड । असवार = घुड़सवार। अग्गेल = आगे के। गोलं = गोल, दल। भिरे = युद्ध में लड़े, एकत्र हुए। जून = योद्धा। जेते = जितने। सुतत्ते = जोशीले, मंजे हुए, प्रचण्ड। अमोलं = अमूल्य, अनमोल रत्न के समान। तिनं = उनके। मद्धि = बीच में। आय = आया। इसे = इस। बरनाय = वर्णन। जायं = किया जा सकता है।

(59)

तिनं घेरियं राज प्रथिराज राजं।
चिहौं ओर घनघोर नीसाँन बाजं॥

शब्दार्थ – घेरियं = घेर लिया। चिहौं = चारों। नीसाँन = नगाड़े। राजं = शोभित। बाजं = बजने लगे।

कवित्त

(60)

बज्जिय घोर निसाँन, राँन चौहान चहौं दिसि।
सकल सूर सामंत, समरि बल जंत्र मंत्र तस॥
उट्ठि राज प्रथिराज, बाग मनों लग वीर नट।
कढ़त तेग मन बेग, लगत मनों बीज झट्ट घट॥
थकि रहे सूर कौतिग गिगन, रगन भगन भइ श्रोन घर।
हर हरषि वीर जग्गे हुलस, हुरव रंगि नव रत्त वर॥

शब्दार्थ – बज्जिय = बजने लगे। घोर = घनघोर स्वर के साथ। निसाँन = नगाड़े। राँन = राजा, राणा। समरि = स्मरण करके। बल = शक्ति। जंत्र मंत्र= जादू-टोना, युक्ति। तस = तस्य, उसका। तेग = तलवार। कढ़त = निकलती है। बेग = गति। लग = लगती है। मनों = मानो। बीज = बिजली। झट्ट = तुरन्त, तत्क्षण। घट = मेघघटा, शरीर। सूर = सूर्य। कौतिग = कौतुक। गिगन = गगन, आकाश। रगन मगन = आप्लावित, सरा-बोर। श्रोन = रक्त। धर = धरा, पृथ्वी। हर (पाठान्तर – हदि) = शिव, हृदय में। हरषि = हर्षित होकर। जग्गे = जाग उठे, चैतन्य हो उठे। हुरव = हुँकार का शब्द। हुरेउ = स्फुरित हुआ। रंगि = रंग। नव = नवीन। रत्त = रक्त।

दूहा

(61)

हुरव रंग नव रत्त वर, भयौ जुद्ध अतिर चित्त।
निस बासुर समुझि न परत, न को हार नह जित्त॥

शब्दार्थ – जुद्ध = युद्ध। अति चित्त = बड़े उत्साह के साथ। निस = निशा, रात्रि। बासुर = बासर, दिन। को = कोई। नह = नहीं। हार = हारता। जित्त = जीतता।

कवित्त

(62)

न को हार नह जित्त, रहेइ न रहहि सूरवर।
घर उप्पर भर परत, करत अति जुद्ध महाभर॥
कहौं कमध कहौं मथ्थ, कहौं कर चरन अन्तरुरि।
कहौं कंध बहि तेग, कहौं सिर जुट्टि फुट्टि डर॥

कहौं दन्त मन्त हय षुर षुपरि, कुम्भ भ्रसुंडह रुंड सब।
हिंदवान रान भय भांन मुष, गहिय तेग चहुवान जब॥

शब्दार्थ – रहेइ = रोकने पर भी। रहहि = सकते। धर = धरा, पृथ्वी । उप्पर = ऊपर। भर = भट, वीर। परत = गिरते। महाभर = महाभट, बड़े-बड़े योद्धा। कहौं = कहीं। कमध = कबन्ध, बिना मस्तक का धड़। मध्य = मस्तक। कर = हाथ। चरन = चरण, पैर। अंतरुरि = अन्तड़ियाँ। बहि = पार हो जाती थी। कंध = कन्धे में से। जुट्टि = जुटना, टकराना। फुट्टि = फुटना। उर = हृदय, वक्षस्थल। दंत = दाँत। मंत = मदोन्मत्त। हय = घोड़े। षुर = खुर, सुम। षुपरि = खोपड़ी। कुंभ = गंडस्थल, मस्तक। भ्रसुंडह = भुशुंड, सूँड़। हिंदवानरात = हिन्दुओं के राणा, राजा। भय = हुआ। भांन मुष = सूर्य के समान देदीप्यमान मुख। गहिय = पकड़ी। चहुबान = चौहान नरेश।

भुजंगी

(63)

गही तेग चहुवांन हिंदवांन रानं।
गजं जूय परि कोप केहरि समानं॥
करे रुंड मुंड करी कुंभ फारे।
बरं सुर सामंत हुकि गर्ज भारे॥

शब्दार्थ – जूथ = यूथ, समूह। परि = टूट पड़ा। करी = हाथी। कुंभ = गंडस्थल, मस्तक। वरं सूर = श्रेष्ठ शूरवीर। हुकि = हुँकार कर। गर्जना करने लगे। भारे = भारी, भयंकर।

(64)

करौ चीह चिक्कार करि कलप भग्गे।
मदं तंजियं लाज ऊमंग मग्गे॥
दौरि गज अंध चहुआंन केरो।
घेरियं गिरद्दं चिहौ चक्क केरो॥

शब्दार्थ – करी = करि, हाथी। चीह-चीक्कार = चीत्क्कार करते, चिंघाड़ते हुए। करि = सूँड। कलप = कटी हुई। भग्गे = भागने लगे। मदं = मद हाथियों के कुम्भस्थल से द्रवित होने वाला एक सुगन्धित पदार्थ। तंजियं = तजकर, छोड़कर। लाजं = लार, लज्जा। ऊमंग = उमंगना, आगे बढ़ना। मग्गे = मार्ग। दौरि = दौड़ना। अंध = अन्धे के समान, उन्मत्त होकर। केरो = का। घेरिय = घेर लिया। गिरद्दं = इर्द-गिर्द, धूल। चिहौं = चारों। चक्क = चक्र, दिशा। फेर = फेरा। चक्क फेरो = चारों ओर चक्कर लगाने लगे।

(65)

गिरद्दं उड़ी भाँन अंधार रैनं।
गई सूधि, सुझ्झै नहीं मझ्झि नैनं॥
सिर नाय कम्मान पृथिराज राजं।
पकरिये साहि जिम कुलिंग बाजं॥

शब्दार्थ – गिरद्दं = गर्द धूल। भांन= सूर्य। अंधार = अंधकार। गई = मारी गई। सूधि = ज्ञान, होश हवास, चेतना, सुध-बुध। सुझ्झै = सूझता, दिखाई देता। मझ्झि = मध्य। नाय = डालकर। कम्मान = धनुष। पकरिये = पकड़ लिया। साहि = बादशाह शहाब-उद-दीन ग़ोरी। जिम = जैसे। कुलिंग = गौरैया, एक चिड़िया। बाजं = बाज।

(66)

लै चल्यौ सिताबी करी फारि फौजं।
परे मीर सै पंच तहँ षेत चौजं॥
रजपुत्त पंचास झुझ्झै अमोरं।
बजै जीत के नद्द नीसान घोरं॥

शब्दार्थ – सिताबी = शिताबी (फारसी शब्द) शीघ्र, तेजी से। करी = हाथी। फारि = चीरता हुआ। सै पंच = पाँच सौ। षेत = खेत, रण क्षेत्र। चौंज = चूजे, मुर्गी के बच्चे, चारों तरफ, चुने हुए, मरे हुए। रजंपुत्त = राजपूत। पंचास = पचास। झुझ्झै = जूझ गए, मारे गए। अमौरं = अमूल्य, एमुड़, पीठ न दिखाने वाले, अडिग। नद्द = शब्द।

दूहा

(67)

जीति भई प्रथिराज की, पकरि साह लै सङ्ग।
दिल्ली दिसि मारगि लगौ, उतरि घाट गिरि गंग॥

शब्दार्थ – दिसि = दशा। मारगि = मार्ग, रास्ता । लगौ = लगा, पकड़ा। गिरि गंग = पहाड़ी गंगा। उतरि = उतरकर।

(68)

वर गोरी पद्मावती, गहि गोरी सुरताँन।
निकट नगर दिल्ली गए, अत्रभुजा चहुँआन॥

शब्दार्थ – गोरी = गौरवर्णा, गोरी स्त्री। गहि = पकड़कर। गोरी सुरताँन = सुल्तान शहाब-उद-दीन ग़ोरी। अत्रभुजा = अष्टभुजा, दुर्गा (पाठान्तर – चत्रभुज = चतुर्भुज, गायंत्री रूपधारिणी महाशक्ति, चतुर्भुजनाथ महादेव)।

कवित्त

(69)

बलि विप्र सोधे लगन्न, सुध धरी परट्ठिय।
हर बाँसह मंडप बनाय, करि भाँवरि गंठिय॥
ब्रह्म बेद उच्चरहिं, होम चौरी जु प्रत्ति वर।
पद्मावती दुलहिन अनूप, दुल्लह प्रथिराज नर॥
डंढयौ साह साहबदीं, अट्ठ सहस हय बर सुबर।
दै दाँन माँन षटभेष कौं; चढ़े राज दुग्गर हुजर॥

शब्दार्थ – बोलि = बुलाकर। सीधे = शोधी, निकाली। लगन्न = लग्न। सुध = शुद्ध, शुभ। परट्ठिय = प्रतिष्ठित की, निश्चित की। हर = हरे, हरित। बाँसह = बाँस का। गंठिय = ग्रन्थि-बन्धन किया, गाँठ जोड़ी। ब्रह्म = ब्राह्मण गण। वेद = वेदमन्त्र। उच्चरहिं = उच्चारण करते हैं। चौरी = चौरा, वेदी। जु = जहाँ। प्रत्ति = प्राप्ति। वर = पति। नर = वीर। डंड्यौ = दण्डित किया, दण्ड दिया। साहाबदीं = शहाब-उद-दीन। अट्ठ सहस = आठ हजार। हय = घोड़े। वर = श्रेष्ठ। सुबर = सुन्दर। षटभेष = यती, योगी, संन्यासी, जंगम, चारण और ब्राह्मण – इन्हें राजस्थान में षटभेष कहा जाता है अर्थात् छः प्रकार के वेष धारण करने वाले विभिन्न व्यक्ति। माँन = सम्मान। राजदुग्गह = राज-दुर्ग, राजमहल। हुजर = हुजूर, समक्ष, सामने (यह अरबी शब्द है)।

(70)

चढ़िय राज प्रथिराज, छाँड़ि साहाबदीन सुर।
त्रिपत सूर सामंत, बजत नीसान गजत धुर॥
चंद्रबदनि मृगनयनि, कलस लैं सिर सनमुष्ष जष।
कनक थारं अति बनाय, मोतिन बँधाय जुष॥
मंडल मयंक वर नार सब, आनन्द कंठह गाइयब।
ढोरंत चँवर किक्करहिं, मुकुट सीस तिक लु दियब॥

शब्दार्थ – सुर = असुर, म्लेच्छ। त्रिपत = तृप्त, सन्तुष्ट। गजत = गर्जन करते हुए, गूँजते हुए। धुर = जोर-जोर से, धरा, पृथ्वी । चन्द्रबदि = चन्द्रमुखी। कलस = कलश। सनमुष्ष = सन्मुख, सामने। जुष = जोखना, स्वागत करना। अति बनाय = खूब अच्छी तरह से सजाकर। आरति बनाय =

आरती सजाकर। बँधाय = बाँधकर अर्थात् भरकर। सुष = सुखपूर्वक। मंडल = घेरा, समूह। मयंक = चन्द्रमा। वर नार = श्रेष्ठ नारियाँ। कंठह = कंठ से। गाइयब = गाया, गाने लगीं। ढोरंत = डुलाना। किक्कर = किंकर, दास, सेवक। करहिं = हाथ से। तिक = तिलक, टीका। जु = जब। दियब = लगाया।

दूहा

(71)

चढ़े राज द्रुग्गह न्निपति, सुमत राज प्रथिराज।
अति अनंद अनंद सै, हिंदुवाँन सिरताज॥

शब्दार्थ – न्निपति = नृपति, राजा। सुमत = बुद्धिमान, ज्ञानी। आनंद = आनन्दित होकर। आनन्द = हर्ष। सिरजात = शिरोमणि।

❖❖❖

विद्यापति

पदावली

भक्ति विषयक पद

शंकर-स्तुति

(1)

भल हर भल हरि भल तुअ कला। खन पित बसन खनहिं बघछला॥
खन पंचानन खन भुज चारि। खन संकर खन देव मुरारि॥
खन गोकुल भए चराइअ गाय। खन भिख माँगिए डमरू बजाय॥
खन गोविन्द भए किअ महिदान। खनहि भसम भरु काँख बोकान॥
एक सरीर लेल दुइ बास। खन बैकुण्ठ खनहिं कैलास॥
भन बिद्यापति बिपरित बानि। ओ नारायण ओ सुलपानि॥

शब्दार्थ – महिदान = पृथ्वीदान। बोकान = चूर्ण। बिपरित बानि = विरोधी वाणी अर्थात् ब्रह्म के सुन्दर-असुन्दर, पालक-संहारक भिन्न स्वरूपों का एक साथ ही वर्णन करना।

देवी-स्तुति

(2)

बिदिता देवी बिदिता हो अबिरल-केस सोहन्ती।
एकानेस सहस को धारिनि जरि रंगा पुरनन्ती॥
कजल रूप तुअ काली कहिए उजल रूप तुअ बानी।
रविमंडल परचंडा कहिए गंगा कहिए पानी॥
ब्रह्मा-घर ब्रह्मानी कहिए हर-घर कहिए गौरी।
नारायण-घर कमला कहिए के जान उतपत तोरी॥
बिद्यापति कविवर एहो गाओल जाचक जन के गति।
हासिनि देइ पति गरुड़नरायन देवसिंघ नरपति॥

शब्दार्थ – बिदिता = प्रसिद्ध। जरि = ज़री (फारसी शब्द) सोने के तारों से संचित अर्थात् अत्यन्त कान्तिमान्। रंगा = छवि वर्ण। पुरनन्ती = परिपूर्ण। कजल = शारदा। परचंडा = सूर्य की प्रचण्ड शक्ति।

श्रीकृष्ण-स्तुति

(3)

नंद क नंदन कदंब क तरुन्तर धिरे धिरे मुरलि बजाव।
समय संकेत-निकेतन बइसल बेरि बेरि बोलि पठाव॥
सामरि, तोरा लागि अनुखन बिकल मुरारि।
जमुना क तर उपबन उद्बेगल फिर फिर ततहि निहारि॥
गोरस बेचए अवइत-जाइत जनि जनि पुछ बनमारि।
तोहे मतिमान, सुमति, मधुसूदन बचन सुनह किछु मोरा॥
भनइ बिद्यापति सुन बर जोवति बंदह नंद किसोरा॥

शब्दार्थ – क = का। बजाव = बजा रहे हैं। संकेत-निकेतन = संकेत-स्थल (पूर्व निश्चित मिलन का स्थान)। बइसल = बैठकर। बेरि बेरि = पुनः पुनः। बोलि पठाव = बुला रहे हैं। सामरि = श्यामा (युवती)। लागि = लिए। अनुखन = प्रतिक्षण। उद्बेगल = उद्विग्न होकर। अवइत-जाइत = आते-जाते हुए। जनि-जनि = प्रत्येक व्यक्ति। मतिमान = चित्त लगाए हुए अर्थात् अनुरक्त।

राधा की स्तुति

(4)

देख-देख राधा रूप अपार।
अपुरुब के विहि आनि मिलाओल खिति-तल लावनि-सार॥
अंगहि अंग अनंगमुरछाइत हेरए पड़ए अधीर।
मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि महि-मधि गीर॥
कत-कत लखिमी चरन-तल नेओछए रंगिनि हेरि विभोरि।
करु अभिलाख मनहिं पदपंकज अहोनिसि कोर अंगोरि॥

शब्दार्थ – विहि = विधि ब्रह्मा। के = किस प्रकार। आनि मिलाओल = लाकर एकत्रित किया है। लावनि-सार = सौन्दर्य का सार। कतकत = अनेक। रंगिनि = सुन्दरी। विभोरि = सुध-बुध खोकर। कोर = गोद। अंगोरि = अंगोर कर रखना, सुरक्षित रखना।

हरि-स्मरण

(5)

माधव बहुत मिनति कर तोय।
दए तुलसी तिल देह समर्पिनु दया जनि छाड़बि मोय॥
गनइत दोसर गुन लेस न पाओवि जब तुहुँ करबि बिचार।
तुहु जगत जगनाथ कहाओसि जग बाहिर नइ छार॥
किए मानुस पसु पखि भए जनमिए अथवा कीट पतंग।
करम विपाक गतागत पुनु पुनु मति रह तुअ परसंग॥
भनइ बिद्यापति अतिसय कातर तरइत इह भवसिंधु।
तुअ पद-पल्लव करि अवलंबन तिल एक देह दिन-बंधु॥

शब्दार्थ – मिनति = प्रार्थना। दए तुलसी तिल देह समर्पिनु = अन्तिम समय जब मुख में तुलसी और हाथ में गोदान के संकल्प में तिल दिए जाएँ। जग बाहिर नइ छार = जगत से बाहर कुछ भी नहीं है। किए = क्या। विपाक = परिणाम। प्रसंग = वार्ता।

(6)

तातल सैकत वारि-बिन्दु सम सुत-मित रमनि समाजे।
तोहे बिसारि मन ताहे समरपिनु अब मझु हब कौन साजै॥
माधव हम परिनाम निरासा।
तुहुँ जगतारन दीन-दयामय अवए तोहर बिसवासा॥
आध जनम हम नींद गमायनु जरा सिसुकत दिन गेला।
निधुबन-रमनि-रभस-रंग मातनु तोहे भजब कोन बेला॥
कत चतुरानन मरि मरि जाओब न तुअ आदि अवसाना।
तोहे जनमि पुनि तोहे समाओत सागर लहरि समाना॥
भनइ बिद्यापति सेष समन भय तुअ बिनु गति नहीं आरा।
आदि अनादि नाथ कहओसि अब तारन भार तोहारा॥

शब्दार्थ – तातल = तप्त। ताहे = उसको अर्थात् सुत-मित-रमणि-समाज को। समरपिनु = अर्पित किया, संलग्न रहा। मझु = मेरा। हब = होगा। निधुबन-रमनि = गोपियाँ (यहाँ स्त्रियाँ मात्र)। रभस-रंग = प्रेम रंग, काम-क्रीड़ा। मातनु = उन्मत्त रहा। सेष समन भय = शेष-भय-शमन, मृत्यु-भय को नष्ट करने वाला।

शृंगार विषयक पद

वयः संधि

(7)

सैसब जौबन दरसन भेल। दुहु दल-बल दंद परिगेल॥
कबहुँ बांधल कच कबहुँ बिथारि। कबहुँ झाँपय अंग कबहुँ उघारि॥
अति थिर नयन अथिर किछु भेल। उरज-उदय-थल लालिम देल॥
चंचल चरन चंचल चित भान। जागल मनसिज मुदित नयान॥
बिद्यापति कह सुनु बर कान। धैरज धरह मिलायब आन॥

शब्दार्थ – दंद = द्वन्द्व (युद्ध)। परिगेल = पड़ गया, आरम्भ हो गया। बिथारि = खोल देना।

नखशिख

(8)

माधव की कहब सुन्दरि रूपे।
कतेक जतन बिहि आनि समारल देखल नयन सरूपे॥
पल्लवराज चरन-जुग सोभित गति गजराज क भाने।
कनक कदलि पर सिंह समारल थापर मेरु समाने॥
मेरु उपर दु इ कमल फुलायल नाल बिना रुचि पाई।
मनिमय हार धार बहु सुरसरि तओ नहिं कमल सुखाई॥
अधर बिंब सन दसन दाड़िम-बिजु रवि ससि उगर्थिक पासे।
राहु दूर बसनैयर न आवथि तै नहिं करथि गरासे॥
सारँग नयन बयन पुनि सारँग सारँग तसु समधाने।
सारँग उपर उगल दस सारँग केलि करथि मधुपाने॥
भनइ बिद्यापति सुन बार जौवति एहन जगत नहिं आने।
राजा सिवसिंघ रूपनारायन – लखिमा देइ पति भाने॥

शब्दार्थ – सरूप = प्रत्यक्ष। पल्लवराज = कमल। सारंग = 1. हरिण, 2. कोमल, 3. कामदेव, 4. कमल, 5. भौंरा जो क्रमशः आँख, वाणी, कटाक्ष, मुख और लटों के उपमान हैं। दस = यहाँ दस से तात्पर्य अनेक से है।

सद्यः स्नाता

(9)

कामिनि करए सनाने। हेरितहि हृदय हनए पँचवाने॥
चिकुर गरए जलधारा। जनि मुख-ससि डर रोअए अँधारा॥
कुच-जुग चारु चकेबा। निअ कुल मिलिअ आनि कोन देबा॥
ते संका भुज-पासे। बाँधि धएल उड़ि जाएत अकासे॥
तितल बसन तनु लागू। मुनिहुक मानस मनमथ जागू॥
भनइ बिद्यापति गावे। गुनिमति धनि पुनमत जन पावे॥

शब्दार्थ – चकेबा = चक्र-वाक। कोन = कौन। देबा = देगा। धएल = दृढ़ता से पकड़ा हुआ। तितल = गीला।

श्रीकृष्ण का प्रेम

(10)

जहँ-जहँ पग-जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरूह झरई॥
जहँ-जहँ झलकत अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग॥
कि हेरल अपरुब गोरि। पइठल हिय मधि मोरि॥
जहँ-जहँ नयन बिकास। तहिं-तहिं कमल-प्रकास॥
जहँ-जहँ लहु हास संचार। तहिंतहिं अमयि-बिकार॥
जहँ-जहँ कुटिल-कटाख। ततहिं मदन-सर लाख॥
हेरइत से धनि थोर। अब तिन भुवन अगोर॥
पुन किए दरसन पाव। अब मोहे इत दुख जाब॥
बिद्यापति कह जानि। तुअ गुन देहब आनि॥

शब्दार्थ – विकास = विकीर्ण। अगोर = संचय करना, रखना। जानि = ज्ञानी, चतुर।

राधा का प्रेम

(11)

कत न बेदन मोहि देसि मदना।
हर नहिं बला मोहिं जुवति जना॥
विभुति भूषण नहिं चानन क रेनू।
बघछाल नहिं मोरा नेतक बसनू॥

नहिं मोरा जटा भार चिकुर क बेनी।
सुरसरि नहिं मोरा कुमुम क स्रेनी॥
चाँद के बिंदु मोरा नहिं इन्दु छोटा।
ललाट पावक नहिं सिंदुर के फोटा॥
नहिं मोरा कालकूट मृगमद चारु।
फनपति नहिं मोरा मुकताम्हारु॥
भनइ बिद्यापति सुन देव कामा।
एक पए दूखन नाम मोर बामा॥

शब्दार्थ – बला = अबला। चानन क = चन्दन का। नेतक बसनू = चुनरी। फोटा = टीका।

कौतुक

(12)

साँझ क बेरि उगल नव ससधर भरम विदित सविताहु।
कुंडल चक्र तरास नुकाएल दूर भेलि हेरथि राहु॥
जनु बइससिं रे वदन हाथ लाई।
तुअ मुख चंगिम अधिक चपल भेल कतिखन धरब नुकाई॥
रक्तोपल जनि कमल बइसाओल नाल नलिन दल तहु।
तिलक कुसुम तह माझु देखि कहु भर आवथिलहु लहु॥
पानि-पलव-गत अधर बिम्ब-रत दसन दाड़िम-बिंज तोरे।
कीर दूर भेल पास न आबए भौंह धनुहिं केभोरे॥

शब्दार्थ – चंगिम = सौन्दर्य।

मिलन-प्रसंग

(13)

सुन्दरि चल लिहु पहुधर ना। चहु दिसि सखि सबकर घर ना॥
जाइइत लागु परम डर ना। जइसे ससि काँप राहु डर ना॥
जाइतहि हार टूटिए गेल ना। भुखन बसन मलिन भेल ना॥
रोए रोए काजर दहाए देल ना। अदकँहि सिंदुर मिटाए देल ना॥
भनइ बिद्यापति गाओल ना। दुख सहि सहि सुख पाओल ना॥

शब्दार्थ – अदकँहि = आतंक से। दहाए = बहा देना।

छलना

(14)

जहि लागि गेलि ताहि कहाँ लइलि हे ता पति बैर पितु काहाँ।
अछलि हे दुख सुख कहह अपन मुख भूषन गमओलह जाहाँ॥
सुन्दरि की कए बुझाओव कंते।
जन्हिका जनम होइत तोहे गेलिहु अइलि हे तिन्हका अन्ते॥
जाहि लागि गेलिहँ से चलि आएल तें मोयँ धाएल नुकाई।
से चलि गेल ताहि लए चललिहुँ तें पंथ भेल अनेआई॥
संकर बाहन खेड़ि खेलाइत मेदनि बाहन आगे।
जे सब अछलि संग से सब चललि भंग उबरि अएलहुँ अति भागे॥
जाहि दुइ खोज करइ छथि सासुन्हि से मिलु अपनासंगे।
भनइ बिद्यापति सुन बर जौबित गुपुत नेह रतिरंगे॥

शब्दार्थ – ता पति बैर पितु = उसका (जल का) पति समुद्र —> समुद्र का शत्रु अगस्त्य —> अगस्त्य का पिता घट।

विरह-प्रसंग

(15)

सरदक ससधर मुखरुचि सोंपलक हरिन के लोचन लीला।
केसपास लए चमरि के सोंपलक पाए मनोभव पीला॥
माधव, जानल न जीवति राही।
जतवा जकर ले ले छलि सुन्दरि से सब सोंपलक ताही॥
दसन-दसा दालिम के सोंपलक बन्धु अधर रुचि देली।
देह दसा सौदामिनी सोंपलक काजर सनि सखि भेली॥
भौंहक भंग अनंगचाप दिहु कोकिल के दिहु बानी।
केवल देह नेह अछ लओले एतवा अएलहुँ जानी॥
भनइ बिद्यापति सुन गर जौवति चित्त झंखह जनु आने।
राजा सिबसिंघ रूपनारायन लखिमा देइ रमाने॥

शब्दार्थ – सनि = समान। अछ लओले = लिए हुए हैं।

❖❖❖

अमीर ख़ुसरो

फ़ारसी-हिन्दी मिश्रित ग़ज़ल

(1)

ज़ हाले-मिस्कीं मकुन तक़ाफुल, दुराए नैना, बनाए बतियाद्द,
कि ताबे-हिज्राँ न दारम ऐ जाँ, न लेहू काहे लगाए छतियाँ।
शबाने-हिज्राँ दराज़ चूँ ज़ुल्फ़ व रोज़े-वसलत चू उम्र कोताह,
सखी पिया को जो मैं न देखूँ, तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ।
यकायक अज़ दिल दो चश्म जादू, बसद फ़रेबम बबुर्द तस्कीं,
किसे पड़ी है जो सुनावे, प्यारे पी से हमारी बतियाँ।
चू शमअ सोजाँ, चू ज़र्रा हैराँ, हमेशा गिरियाँ ब इश्क़ आमह,
न नींद नैनां न अंग चैना, न आप आवे न भेजे पतियाँ।
बहक़ आंमह कि रोज़े-मेहशर बदादा मारा फ़रेब ख़ुसरो,
सो पीट मन की दुराय राखो जो जाय पाऊ पिया की खतियाँ।

अर्थ – 'ज़ हाले-मिस्कीं मकुन तक़ाफुल' = गरीब के हाल से ग़फलत न कर अर्थात् मुझ गरीब की उपेक्षा मत करो। 'कि ताबे-हिज्राँ न दारम ऐ जाँ' = ऐ मेरी जान ! जुदाई की ताब मेरे अंदर नहीं है अर्थात् मुझ में वियोग सहने की क्षमता नहीं है। 'शबाने-हिज्राँ दराज़ चूँ ज़ुल्फ़ व रोज़े-वसलत चू उम्र कोताह' = जुदाई की रातें ज़ुल्फ़ की भाँति लम्बी हैं और मिलने के दिन ज़िन्दगी की तरह छोटे हैं। 'यकायक अज़ दिल दो चश्म जादू, बसद फ़रेबम बबुर्द तस्कीं' = अचानक इन जादू भारी दोनों आँखों ने सैंकड़ों बहानों से मेरा धैर्य छीन लिया। 'चू शमअ सोजाँ, चू ज़र्रा हैराँ, हमेशा गिरियाँ ब इश्क़ आमह' = मैं आख़िर जलती मोमबत्ती और परेशान नज़रों की तरह उस चाँद (माशूक़) के प्रेम से फिर गया। 'बहक़ आंमह कि रोज़े-मेहशर बदादा मारा फ़रेब ख़ुसरो' = महशर (प्रलय) के दिन अर्थात् मिलन के दिन के सहारे जिसने मुझे (ख़ुसरो को) धोखा दिया है।

हिन्दी ग़ज़ल

(1)

जब यार देखा नैन भर दिल की गई चिन्ता उतर,
ऐसा नहीं कोई अजब, राखे उसे समझाय कर।
जब आँख से ओझल भया, तड़पन लगा मेरा जिया,
हक्का इलाही क्या किया आँसू चले भर लाय कर।
तूँ तो हमारा यार है, तुझ पर हमारा प्यार है,
तुझ दोस्ती विसियार है, एक शब मिलो तुम आय कर।

जाना तलब मेरी करूँ, दीगर तलब किसकी करूँ,
तेरी जो चिन्ता दिल करूँ, एक दिन मिलो तुम आय कर।
मेरो जो मन तुमने लिया, तुम उठा गम को दिया
तुमने मुझे ऐसा किया, जैसा पतंगा आग पर।
'ख़ुसरो' कहे बातें गज़ब, दिल में न लावे कुछ अजब,
कुदरत ख़ुदा की है अजब, जब जीव दिया गुल लाय कर।

क़व्वाली

(1)

छाप-तिलक तज दीन्ही रे, तो से नैना मिला के।
प्रेम बटी का मदवा पिला के
मतवारी कर दीन्ही रे, मो से नैना मिला के।
'ख़ुसरो' निज़ाम पै बलि-बलि जइए,
मोहे सुहागन कीन्ही रे, मो से नैना मिला के।

गीत

(1)

काहे को ब्याही विदेश रे,
लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
कुहुकत घर-घर जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,
चुग्गा चुगत उड़ि जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बेले की कलियाँ
जो माँगे चली जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खूँटे की गइया
जित हाँको हँक जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
लाख की बाबुल गुड़िया जो छाँड़ी
छोड़ि सहेलिन का साथ, लखि बाबुल मोरे।
महल तले से डोलिया जो निकली,
भाई ने खाई पछाड़, लखि बाबुल मोरे।
आम तले से डोलिया जो निकली,
कोयल ने की है पुकार, लखि बाबुल मोरे।
तू क्यों रोवे है, हमरी कोइलिया,

हम तो चले परदेस, लखि बाबुल मोरे।
नंगे पाँव बाबुल भागत आवै,
साजन डोला लिए जाय, लखि बाबुल मोरे।

(2)

काहे को ब्याही विदेश रे,
लखि बाबुल मोरे।
भइया के दी है बाबुल महला-दुमहला,
हम को दी है परदेस, लखि बाबुल मोरे।
मैं तो बाबुल तोरे पिंजड़े की चिड़िया
रात बसे उड़ि जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
ताक भरी मैंने गुड़िया जो छोड़ी,
छोड़ा दादा मियाँ का देस, लखि बाबुल मोरे।
प्यार भरी मैंने अम्मा जो छोड़ी
छोड़ी दादी जी की गोद, लखि बाबुल मोरे।
कोठे तले से पलकिया जो निकली
बिरना ने खाई पछाड़, लखि बाबुल मोरे।
परदा उठा के जो देखी,
आए बेगाने देस, लखि बाबुल मोरे।

ख़ालिक़ बारी

(1)

ख़ालिक़ बारी, सिरजन हार
बाहिद एक, बदा करतार।

शब्दार्थ – 1. ख़ालिक़ = उत्पत्तिकर्त्ता। 2. बारी = सृष्टिकर्त्ता। 3. बाहिद = एक। 4. बदा = स्रष्टा।

दोहे

(1)

ख़ुसरो ऐसी प्रीत कर, जैसे हिन्दू जोय।
पूत पराये कारने जल-जल कोयला होय॥

(2)

कमाई अपनी फेंक दे और जी पर नहीं मलाल।
वा से क्यों हठ जात है, जो रोज़ी खाये हलाल॥

पहेलियाँ

(1)

गोल मटोल और छोटा-मोटा,
हर दम वह तो ज़मीन पर लोटा।
ख़ुसरो कहे नहीं है झूठा,
जो न बूझे अकल का खोटा।

– लोटा

(2)

एक नार कुएँ में रहे,
वाका नीर खेत में बहे।
जो कोई वाके नीर को चाखे
फिर जीवन की आस न राखे॥

– तलवार

(3)

एक थाल मोती से भरा।
सबके सिर पर औंधा धरा॥
चारों ओर वह थाली फिरे।
मोती उससे एक न गिरे॥

– आसमान

(4)

एक नार ने अचरज किया।
साँप मार पिंजरे में दिया॥
ज्यों-ज्यों साँप ताल को खाए।
ताल सूखे और साँप मर जाए॥

– दिए की बाती

(5)

नारी में नारी बसे, नारी में नर दोय।
दो नर में नारी बसे, बूझे बिरला कोय॥

– नथिया (नथ)

कह मुकरियाँ

(1)

बरसा बरस वह देश में आवे
मुँह में मुँह लगा रस प्यावे।
वा ख़ातिर मैं खरचे दाम,
ऐ सखि साजन, ना सखि आम॥

(2)

सोभा सदा बढ़ावन हारा
आँखन ते छिन होत न न्यारा।
आए फिर मेरे मन रंजन,
ऐ सखि साजन, ना सखि अंजन॥

निस्बतें

(1)

बादशाह और मुर्ग में क्या निस्बत है?

– ताज*

*बादशाह और आदमी दोनों के ताज होता है। ताज का अर्थ 'राजमुकुट' भी है और 'कलंगी' भी।

(2)

आदमी और गेहूँ में क्या निस्बत है?

– बाल*

*बाल का एक अर्थ 'केश' है और अन्य अर्थ 'गेहूँ की बाली' भी है।

दो सुखने

(1)

रोटी जली क्यों ?
घोड़ा अड़ा क्यों ?
पान सड़ा क्यों ?

– फेरा न था।

शब्दार्थ – फेरा = 1. पलटा, 2. मोड़ा, 3. अदला-बदला, पलटा।

(2)

संबोसा क्यों न खाया ?
जूता क्यों न चढ़ाया ?

– तला न था।

ढकोसले

(1)

एक बार अमीर ख़ुसरो कहीं जा रहे थे। उन्हें रास्ते में बड़ी प्यास लगी। उन्होंने देखा कि समीप ही एक कुएँ पर चार पनिहारन पानी भर रही थीं। ख़ुसरो वहाँ पानी पीने पहुँचे। उनमें से एक ने कहा कि ये तो अमीर ख़ुसरो हैं। दूसरी ने कहा हमें कैसे विश्वास हो कि ये अमीर ख़ुसरो ही हैं ! अमीर ख़ुसरो तो बड़े आशु कवि हैं। बात की बात में कविता, पहेली, कह मुकरियाँ बना देते हैं। हमें भी अपनी फर्माइश रखनी चाहिए। चारों ने अपने-अपने चार अलग-अलग शब्द 'खीर', 'चरखा', 'कुत्ता' और 'ढोल' उनके सामने रखे और कहा कि जब वे इन चारों शब्दों को अपनी कविता में रखकर सुना देंगे तभी हम पानी पिलाएँगी। ख़ुसरो ने चारों शब्दों को मिलाकर निम्नलिखित ढकोसला कहा –

खीर पकाई जतन से और चरखा दिया जलाय।
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजाय॥
ला पानी पिला

(2)

गौरी के नैना ऐसे बड़े जैसे बैल के सींग।

❖❖❖